ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा हृणीयथाः।। साम 227
हे मनुष्य क्रोध मत कर।
O ye Human! Never be angry or wrathful.

वर्ष 37, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 जून, 2014 से रविवार 22 जून, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

140 वर्षों के इतिहास में केरल में पहले वृहद् वेद प्रचार केन्द्र के निर्माण की ओर आर्यजगत्

केरल में आरम्भ हुआ आर्यसमाज का नया इतिहास

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र का होगा निर्माण

4 करोड़ की लागत का अनुमान : कालीकट के ककोड़ में 2 एकड़ भूमि की खरीद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में महत्वपूर्ण कदम : महाशय धर्मपाल जी वास्तविक बधाई के पात्र – आचार्य बलदेव

आठ महीने में निर्माण कार्य पूर्ण करने का संकल्प : अगस्त प्रथम सप्ताह में शिलान्यास करने पर विचार

दक्षिण भारत में वेद प्रचार के कार्य में अत्यन्त सहायक होगा यह केन्द्र
– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अन्तर्गत संचालित होगा महाशय धर्मपाल वेद अध्ययन केन्द्र

जिन राज्यों में आर्यसमाज का सांगठनिक कार्य नहीं है उन राज्यों में आर्यसमाज की संस्थागत नींव रखने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम – ब्र. राजसिंह आर्य

क्रय की गई भूमि पर हुए यज्ञ में भारी वर्षा के बावजूद लगभग 300 लोगों ने पहुंचकर दिए निर्माण हेतु मासिक सहयोग के आश्वासन

केरल में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज का प्रचार और अधिक गति से होगा – आचार्य एम. आर. राजेश

विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 3, 4, 5 पर

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र के लिए खरीदी गई भूमि पर कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष आचार्य एम. आ. राजेश के साथ सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, एम.डी.एच. के प्रतिनिधि श्री प्रेम अरोड़ा जी। क्रय की गई भूमि पर यज्ञ पूर्णाहुति का एक दृश्य।

दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाओं एवं आर्यजनों की ओर से

15वीं लोक सभा में नव निर्वाचित आर्य सांसदों का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

रविवार 22 जून, 2014 समय : सायं : 4:30 से 7:30 बजे

यज्ञ : सायं 4:30 बजे **अभिनन्दन :** सायं 5:00 बजे **प्रीतिभोज :** सायं 7:30 बजे

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, डॉ. सत्यपाल सिंह, श्री अश्विनी चोपड़ा, श्री प्रवेश वर्मा, श्री रमेश बिधुड़ी, जन. वी. के. सिंह

स्थान : आर्य सभागार, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, समस्त वेद प्रचार मंडल

वेद-स्वाध्याय

जन्म-मरण धर्मा जीवात्मा

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्। स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वंतः।। ऋग्वेद 10/177/3

अर्थ—मैं **(गोपाम्)** इन्द्रियों के स्वामी **(अनिपद्यमानम्)** अविनश्वर, नित्य **(आ च परा च)** शरीर में आने और जाने के **(पथिभिः)** मार्गों से **(चरन्तम्)** कर्मफल भोगते हुये जीवात्मा को **(अपश्यम्)** देखता हूँ। **(सः)** वह **(सध्रीचीः)** पुण्य कर्म और **(विषूचीः)** पाप कर्म की वासनाओं से **(वसानः)** आच्छादित हुआ **(भुवनेषु अन्तः)** लोक-लोकान्तरों एवं विभिन्न योनियों में **(आवरीवर्ति)** आता-जाता रहता है।

मन्त्र में आत्मा के लिये चार बातें कहीं हैं—

आत्मा इन्द्रियों का स्वामी है, वह नित्य है, कर्मों का फल भोगने के लिये एक शरीर से दूसरे शरीर में आता-जाता है और पुण्य कर्मों से पुण्य लोक तथा पाप कर्मों से अधम लोक या योनियों में इन कर्मों का फल भोगता है। इन पर क्रमशः विचार करते हैं—

१. मन्त्र में आत्मा को **अनिपद्यमान** अर्थात् अविनाशी, नित्य माना है। ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीनों अनादि तत्त्व हैं। यदि आत्मा का प्रारम्भ माना जाये तो उसे उत्पन्न करने वाला कौन था। यदि ईश्वर ने इस शरीर में रूह फूंक दी, जैसा बाइबिल और कुरान में है तब आत्मा का अन्त भी होना चाहिये और जिस पदार्थ से आत्मा का निर्माण हुआ है, प्रवाह से अनादि होने के कारण उसकी समाप्ति भी हो जायेगी। जब ईश्वर ही नवीन आत्माओं की उत्पत्ति करता है तो कोई सुखी-दुःखी, मन्दबुद्धि-बुद्धिमान्, धनी-निर्धन किसके आधार पर होता है। वह जिसको चाहे जन्नत दे और दूसरों को दोजख की अग्नि। ऐसा मानने पर उसमें पक्षपात का दोष आयेगा। इसलिये आत्मा को अनादि मानना ही ठीक है। आत्मा जब शरीर धारण कर लेता है तब उसकी जीव संज्ञा हो जाती है।

२. आत्मा **गोपा** अर्थात् इन्द्रियों का रक्षक, स्वामी है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन ये सब आत्मा के सहयोगी है। इन्हीं के द्वारा आत्मा विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। ये इन्द्रियाँ जड़ हैं परन्तु आत्मा के सान्निध्य से चेतनवत् कार्य करती दिखाई देती हैं। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार चारों अन्तःकरण अर्थात् आन्तरिक इन्द्रियाँ मानी गई हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, मन, बुद्धि इन सतरह तत्त्वों का संघात सूक्ष्म शरीर कहलाता है जो मृत्यु के पश्चात् दूसरे शरीर में आत्मा को आवेष्टित किये हुये जाता है। प्रलय काल अथवा मुक्ति को छोड़ इस सूक्ष्म शरीर से आत्मा आवेष्टित रहता है।

३. आ च परा च पथिभिश्चरन्तम्—शरीर में आने और जाने के मार्गों से कर्मफल भोगते हुये जीवात्मा को मैं देखता हूँ। यह वचन किसी योगी का ही हो सकता है। योगी और परमात्मा ही जीवों के गमनागमन को जान सकते हैं। आत्मा जब शरीर को छोड़ता है तो सूक्ष्म शरीर के साथ उदान प्राण इसे शरीर के किसी द्वार से निकाल कर ले जाता है। इसके जाने की तीन गतियाँ हैं। जो जीव दान, पुण्य आदि शुभ कर्म करता है वह पितृयान के मार्ग से चन्द्रलोक अर्थात् जो सुख देने वाले लोक या शरीर हैं उनको प्राप्त करता है। इनमें भी जो जीव जिस इन्द्रिय में अधिक आसक्त है वह उसी मार्ग से जाता है। विषय वासनाओं में फंसे हुये अधम मार्ग से जाते हैं। जिन्होंने योग साधना और देवयान का मार्ग चुना है और जो मुक्त हो गये हैं वे ऊर्ध्व मार्ग मूर्धा के द्वार से जाते हैं। उनका पुनरागन मुक्ति का जितना काल है, उतने समय तक नहीं होता। वे परमात्मा के आनन्द में सर्वत्र अव्याहत गति से स्वच्छन्द भ्रमण करते और मुक्ति के आनन्द को भोगते हैं। जो देवयान, पितृयान के मार्ग से पृथक् सामान्य पशु-सदृश जीवन जीते हैं वे **जायस्व-म्रियस्व** बार-बार उत्पन्न होते और मरते रहते हैं।

जब पाप-पुण्य बराबर होता है तब साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। पाप का प्रतिशत कुछ अधिक बढ़ जाने पर पशु योनि और पुण्य कर्मों के अधिक होने पर देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता है।

जब जीवात्मा इस शरीर से निकलता है उसी का नाम मृत्यु और शरीर से संयोग होने का नाम जन्म है। जब शरीर छोड़ता तब यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है और अपने कर्मानुसार दूसरी योनि को प्राप्त होता है। जैसे तृण जलायु (सुण्डी) किसी तिनके के आगे वाले भाग को पकड़ कर फिर अपने आप को पहले तिनके से खींच लेती है वैसे ही जीवात्मा इस शरीर रूपी तिनके को फेंक कर दूसरे शरीर का आश्रय ले उसी में प्रविष्ट हो जाता है। इस प्रकार आवागमन का यह चक्र मुक्ति न हो तब तक चलता ही रहता है।

४. स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः जो कर्म किया जाता है उससे संस्कार बनते हैं। संस्कारों से वासना अर्थात् जैसे संस्कार हैं वैसे ही कर्म करने की इच्छा उत्पन्न होती है। ये वासनायें ही जीवात्मा को अगली योनियों में ले जाती है। जो **सध्रीचीः** अर्थात् सहयोगिनी और पुण्य वासना होती हैं वे पुण्य लोक को प्राप्त कराती हैं और **विषूचीः** पीड़ा दायक, पापरूप पाप योनियों में ले जाती हैं। व्यक्ति जैसा संकल्प करता है, वैसा ही कर्म करता है। जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। इसलिये **क्रतुमयः पुरुषः** कहा गया है जब कामनायें समाप्त हो जाती हैं तो जीवन्मुक्त हो जाता है।

शरीर, वाणी मन से किये पापों को उन्हीं से भोगा जाता है। अर्थात् शरीर से किये पापों का फल शरीर को ही भोगना पड़े गा। शरीर से किये पाप-चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्मों का फल वृक्षादि स्थावर का जन्म, वाणी से किये असत्य, कठोर सम्भाषण, चुगली और बकना आदि का फल पक्षी मृगादि की योनियाँ और मन में किसी को मारने की इच्छा, किसी के धन को हड़पने की इच्छा तथा नास्तिक-बुद्धि वालों को चाण्डाल आदि का शरीर मिलता है। जो गुण इन जीवों के देह में अधिकता से वर्त्तता है, वह गुण उस जीव को अपने सदृश कर लेता है। तमोगुण का लक्षण काम, रजोगुण का अर्थ-संग्रह की इच्छा और सत्त्वगुण का लक्षण धर्म सेवा करना है। किन कर्मों का क्या फल मिलता है इसके लिये मनुस्मृति का बारहवां अध्याय अथवा सत्यार्थप्रकाश का नवम समुल्लास देखना चाहिये।— ***क्रमशः***

वेद मन्त्र भावार्थ

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। यजुर्वेद 36/18

पदार्थ १ :- (दृते) अविद्यान्धकार निवारक जगदीश्वर विद्वन् वा! जिससे (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (मित्रस्य) मित्र की (**चक्षुषा**) दृष्टि से (**मा**) मुझको (सम्, ईक्षन्ताम्) सम्यक् देखें (**अहम्**) मैं (**मित्रस्य**) मित्र की (**चक्षुषा**) दृष्टि से (**सर्वाणि, भूतानि**) सब प्राणियों को (**समीक्षे**) सम्यक् देखूँ। इस प्रकार सब हम लोग परस्पर (**मित्रस्य**) मित्र की (**चक्षुषा**) दृष्टि से (समीक्षामहे) देखें इस विषय में हमको (दृꣳह) दृढ़ कीजिए।

(ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य)

पदार्थ २ :- हे (**दृते**) सर्व दुःखविदारक परमात्मन्! तू (**मा**) मुझको संन्यास धर्म में (दृꣳह) बढ़ा। हे सर्वमित्र! तू (**मित्रस्य**) सर्वसुहृद् आप्तपुरुष की (**चक्षुषा**) दृष्टि से (**मा**) मुझको सब का मित्र बना। जिससे (सर्वाणि) सब (**भूतानि**) प्राणिमात्र मुझको मित्र की दृष्टि से (**समीक्षन्ताम्**) देखें और (**अहम्**) मैं (**मित्रस्य**) मित्र की (**चक्षुषा**) दृष्टि से (**सर्वाणि भूतानि**) सब जीवों को (**समीक्षे**) देखूँ। इस प्रकार आप की कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम लोग एक दूसरे को (**मित्रस्य चक्षुषा**) सुहृद्भाव की दृष्टि से (**समीक्षामहे**) देखते रहें। (संस्कार विधि)

व्याख्यान १ :- इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि मनुष्य लोग आपस में सब प्रकार के प्रेमभाव से सब दिन वर्त्तें। और सब मनुष्यों को उचित है कि जो वेदों में ईश्वरोक्त धर्म है, उसी को ग्रहण करें और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जिससे धर्म में निष्ठा होवे। जैसे -

हे (**दृते**) सब दुःखों का नाश करने वाले परमेश्वर! आप मेरे उपर ऐसी कृपा कीजिये कि जिससे मैं सत्यधर्म को यथावत् जानूँ (**मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि०**) और सब प्राणी मुझ को पक्षपातरहित मित्र की दृष्टि से प्रेमभाव से सदा देखें अर्थात् मेरे मित्र या बन्धु हो जायें। ऐसी इच्छा से युक्त (दृꣳह मा) मुझको सत्य सुख और शुभ गुणों से सदा बढ़ाइये। (**मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि०**) इसी प्रकार से मैं भी सब मनुष्यादि प्राणियों को प्रेम बुद्धि से देखूँ अर्थात् अपना मित्र जानूँ और हानि, लाभ, सुख और दुःख में अपने आत्मा के समतुल्य ही सब जीवों को मानूँ (**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**) हम सब लोग आपस में मिलके सदा मित्रभाव रखें और सत्यधर्म के आचरण से सत्यसुखों को नित्य बढ़ावें। जो ईश्वर का कहा यह धर्म है, यही एक सब मनुष्यों को मानने के योग्य है। (ऋ. भा. भू. वेदोक्तधर्मविषय)

व्याख्यान २ :- हे अनन्तबल महावीर ईश्वर ! "दृते" हे दुष्टस्वभाव नाशक! विदीर्ण कर्म अर्थात् विज्ञानादि शुभ गुणों का नाशकर्म करने वाला मुझको मत रखो (मत करो) किन्तु उससे मेरे आत्मादि को विद्या, सत्य धर्मादि शुभ गुणों में सदैव अपनी कृपा=सामर्थ्य से स्थित करो।

"दृꣳह मा" हे परमैश्वर्यवन्! भगवन् धर्मार्थकाममोक्षादि तथा विज्ञानादि दान से अत्यन्त मुझको बढ़ा।

"मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि." हे सर्वसुहृदीश्वर सर्वान्तर्यामिन्! सब भूत प्राणिमात्र मित्रदृष्टि से यथावत् मुझको देखें सब मेरे मित्र हो जायें, कोई मुझसे किञ्चिन्मात्र भी वैर न करे।

"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि." हे परमात्मन्! आप की कृपा से मैं भी निर्वैर होके सब भूत प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्रदृष्टि से अपने प्राणवत् प्रिय जानूँ, अर्थात् "मित्रस्य, चक्षुषेत्यादि" पक्षपात छोड़कर के सब जीव देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर अपना वर्त्ताव करें।

अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्त्तें। यह परमधर्म का सब मनुष्यों के लिये परमात्मा ने उपदेश किया है, सब को यही मान्य होने के योग्य है। आर्याभि.)

भावार्थ :- (ईश्वर का उपदेश है कि) वे ही धर्मात्मा जन हैं जो अपने आत्मा के सदृश सम्पूर्ण प्राणियों को मानें, किसी से भी द्वेष न करें और मित्र के सदृश सबका सदा सत्कार करें। (ऋ.दया. कृत यजुर्वेदभाष्य)

टिप्पणी :- (क) - ईश्वर सब जीवों से स्नेह या प्रीति करता है या सब का सुख चाहता है, इसलिये वह 'सर्वमित्र' हैं।

- संकलन व संपादन :-

स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागरपुर,
जि.-साबरकांठा (गुजरात)- ३८३३०७

प्रथम पृष्ठ का शेष

केरल में वैदिक धर्म प्रचार के कार्य : एक दृष्टि

अन्य जिलों में भी आर्यसमाज के केन्द्रों की स्थापना के होंगे प्रयास – धर्मपाल आर्य

आचार्य एम. आर. राजेश जी एवं उनके सहयोगियों के निर्देशन में भूमि पर प्रचार कार्य आरम्भ

मलयालम, संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में सम्पादित होंगे कार्यक्रम

केरल भारत का एक ऐसा प्रान्त रहा है जहां पर आर्यसमाज का संगठनात्मक ढांचा कभी विशेष रूप से खड़ा नहीं हो सका। आर्यसमाज के केन्द्र उ.भारत में थे। दिल्ली पंजाब आदि से दूर होने के कारण भी ऐसा हुआ और भाषायी समस्या के चलते भी। केरल की भूमि कभी वेद मन्त्रों से आच्छादित रही है, वेद और संस्कृत के महापण्डितों ने केरल की भूमि पर जन्म लिया है। किन्तु बढ़ते ब्राह्मणवाद, पाखण्ड, जातिवाद, ऊंच-नीच के कारण वैदिक धर्मियों का बहुत बड़ी मात्रा में विधर्मी हो जाना हम सबके लिए दुखदायी विषय रहा है। वीर सावरकर ने मोपला उपन्यास में भी विस्तार से इस विषय में लिखा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का केरल की ओर ध्यान गया और वहां कार्य आरम्भ किया गया। कुछ आर्यसमाज मन्दिरों की स्थापना भी हुई किन्तु अब वह सब नैपथ्य में है। कालान्तर में संगठन उस ओर ध्यान नहीं दे सका, जिसके कारण आर्यसमाज के संगठनात्मक नक्शे पर केरल कभी कोई विशेष उपस्थिति दर्ज नहीं कर सका। आचार्य नरेन्द्र भूषण जी ने कुछ कार्य त्रिवेन्द्रम में किया, किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् वह कार्य भी समाप्त प्राय: हो गया। कालीकट नगर में आचार्य एम. आर. राजेश जी ने गत लगभग 8-9 वर्ष पूर्व वेद प्रचार की नई मुहिम आरम्भ की, जिसके तहत उन्होंने परिवारों को यज्ञ और वेद से जोड़ना आरम्भ किया और अपने संकल्प को लेकर उन्होंने जो यात्रा आरम्भ की, उसका परिणाम यह हुआ कि हजारों परिवारों ने यज्ञ को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। केरल की भूमि जहां पर मुस्लिम एवं ईसाई मत के अनुयायी 50 % से भी अधिक संख्या में निवास करते हैं, में वेद का इतना बड़ा कार्य आरम्भ होना हम सबके लिए आश्चर्य का विषय है, वह भी बिना किसी जाति, या लिंगभेद के।

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा ने सार्वदेशिक सभा के समक्ष कुछ समय पूर्व यह विषय रखा और वहां पर इन गतिविधियों को बड़ा करके आर्यसमाज के संगठन के हित में कार्य करने को कहा। इसी कड़ी में आचार्य एम. आर. राजेश जी ने कालीकट में एक बड़े सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया। जिसको देखकर सभी जन भाव-विभोर हो गए। उन्होंने कुछ समय बाद होने वाले सोमयाग का निमन्त्रण महाशय धर्मपाल जी एवं सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को दिया। फरवरी में महाशय धर्मपाल जी के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, डॉ. राधाकृष्ण वर्मा, दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रेम कुमार अरोड़ा तथा मैं स्वयं वहां गए। वहां उस यज्ञ के अवसर पर केरल में वैदिक धर्म के कार्य को बढ़ाने की चर्चा हुई, जिसमें एक बड़ा केन्द्र को स्थापित करने की सहमति बनी। धन की बात आई तो लगभग जमीन 2 करोड़ रुपये में खरीदी जानी थी। मैं इस लेख के माध्यम से महाशय धर्मपाल जी का धन्यवाद करना चाहूंगा जिन्होंने इस राशि का भार वहन करने में एक मिनट से अधिक का समय नहीं लगाया तथा सहर्ष कहा कि इसे शीघ्र खरीदकर कार्य आरम्भ किया जाए। जो योजना इस केन्द्र को लेकर तैयार की गई है, उसके अनुसार अगले 5 वर्षों में उत्तरी केरल के 10 जिलों में आर्यसमाज का कोई न कोई केन्द्र स्थापित किया जाएगा। इस केन्द्र में यज्ञ, वेद, वैदिक सिद्धान्तों को प्रत्येक व्यक्ति को सिखाने की तथा देश-विदेश से आने वाले अंग्रेजी भाषी महानुभावों को वैदिक धर्म का सार्थक ज्ञान देने की व्यवस्था की जाएगी।

सार्वदेशिक सभा शीघ्र हीं वहां एक बड़ा आयोजन करने जा रही है जिसमें हम चाहेंगे कि सारे देश के प्रबुद्ध आर्य महानुभाव भाग लें तथा केरल में वैदिक धर्म को आगे बढ़ने में अपना योगदान सनिश्चित कर सकें।

केरल में जाकर जो देखा उसका वर्णन करना कठिन है, फिर भी अगले अंक में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

केरल में वेद अनुसंधान केन्द्र बनने की सूचना दिए जाने पर प्राप्त एस.एम.एस. सन्देश

राजेश आर्य, मुजफ्फर नगर – आपने केरल में जो भूमि अर्जन बताई, आपकी सारी टीम को ढेर सारी बधाई।

राजकुमार, बीदर – महाशय जी का जीवन चलता रहे, आर्यजन उनके लम्बी जीवन की कामना करें, हर्ष समाचार सुनाने के लिए धन्यवाद।

अशोक मेहतानी, गुड़गांव – भाग्य की मां का नाम कर्म है। वाह! महाशय जी आपने तो अपना भाग्य स्वयं ही लिख डाला और विनय जी आप सबने भी अपने जीवन को सफल बनाने का रास्ता भी प्रशस्त कर लिया, आप दोनों को नमन व ईश्वर से पूर्ण स्वास्थ्य व दीर्घायु की याचना।

नरेन्द्र अरोड़ा, शालीमार बाग – अति सुन्दर, वांट टू सैंड पैटी कंट्रीब्यूशन 11000/- 4 कालीकट, प्लीज एडवाईज नेम ऑन चैक।

लोकेश, नोएडा – बहुत प्रसन्नता की बात है, महाशय जी की सुदीर्घ आयु और सतत् स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

बृजेश गौतम, दिल्ली – केरल मे दिल्ली सभा द्वारा आर्यसमाज की गतिविधियों के लिए आपके प्रयासों से मिली भूमि फलवती होवे।

गांधीधाम – विनय जी बहुत-बहुत बधाई। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप सभी मिलकर ऋषि के कार्य को इसी प्रकार निरन्तर आगे बढ़ाते रहें।

सुनील मान, करनाल- कांग्रेच्यूलेशन, सिंसेयर थैंक टू रिस्पेक्टिड महाशय जी एंड यू आल आर्या।

डॉ. लाम्बा, नजफगढ़ – ईश्वर आप सबको ऐसे ही कार्य करने की प्रेरणा एवं शक्ति दें। आपको भी बधाई।

रवि पी. कथूरिया, गोविन्दपुरी- सभी आर्य परिवारों को हार्दिक शुभकामनाएं। महाशय जी को श्रेद्धय आभार।

अरोड़ा जी, अशोक नगर- आप सबको तथा महाशय जी को इसकी बधाई।

राजेश मैंदीरत्ता, लाजपत नगर – विनय जी इस कार्य के लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

आर. के. सिंघल, गुवाहाटी – बधाईयां परमात्मा महाशय जी का हाथ आर्यसमाज के उत्थान व कृण्वन्तो विश्वमायम् हेतु बना रहे और उन्हें दीर्घायु प्रदान करें।

नरेश आर्य, दिलशाद गार्डन – यह सभा एवं आपके कठिन परिश्रम का फल है, हार्दिक बधाई।

वीरेश बुग्गा, हनुमान रोड – आपके और आर्यसमाज के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वराज ग्रोवर, पंजाब – महाशय जी आपको तथा आपकी टीम को हार्दिक बधाई। सत्यनिष्ठा से किए गए कर्म का प्रतिफल अवश्य मिलता है।

अजय सहगल, डिफेंस कालोनी – महाशय जी के नेतृत्व में अभी और कीर्तिमान स्थापित करने हैं, प्रभु का आशीर्वाद बना रहे।

अशोक गुप्ता, सूरजमल विहार – बहुत-बहुत शुभकामनाएं तुमको एवं महाशय जी को। सदियों तक आर्यजगत् ऋणी रहेगा।

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

वेद के अंग्रेजी अनुवाद के 100 सैट विद्वानों एवं साहित्यिक संस्थाओं को नि:शुल्क वितरित किया गए

यज्ञ बन चुका है हजारों परिवारों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग : बिना जाति, बिना लिंगभेद के चल रहा है वेद अध्ययन एवं यज्ञ अनुष्ठान

क्रय की गई भूमि पर हुए यज्ञ में भारी वर्षा के बावजूद पहुंचे सैकड़ों लोग

धर्मपाल आर्य जी ने सभा की ओर से कराई भूमि की रजिस्ट्री : भूमि पर किया गया वृक्षारोपण

आस्था चैनल पर वैदिक प्रवचनों के कार्यक्रमों का प्रसारण

जून 2014 प्रतिदिन रात्रि 9:30 से 10:00 बजे दूसरे दिन पुन: प्रसारण आस्था भजन चैनल पर रात्रि 8:00 से 8:30 बजे

दिनांक	कार्यक्रम/वक्ता	विषय	दिनांक	कार्यक्रम/वक्ता	विषय
21 जून	प्रवचन डॉ. वागीश आचार्य	सोलह संस्कार -3	26 जून	प्रवचन डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास -4
22 जून	लघु चलचित्र	मार्च	27 जून	प्रवचन आचार्य सत्यप्रकाश	पातंजल योग दर्शन -4
23 जून	प्रवचन आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	क्रियात्मक योगाभ्यास -4	28 जून	प्रवचन डॉ. वागीश आचार्य	सोलह संस्कार -4
24 जून	प्रवचन स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	ईशोपनिषद्-4	29 जून	लघु चलचित्र	विज्ञान वरदान या अभिषाप
25 जून	प्रवचन आचार्य आशीष जी	मधुर सम्बन्धों के स्वर्णिम सूत्र-4	30 जून	प्रवचन आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	क्रियात्मक योगाभ्यास -5

पवित्र वैदिक धर्म की पताका का केन्द्र – केरल

ईश्वरीय ज्ञान जन-जन तक जब तक नहीं फैलेगा, तब तक यह संसार सुख शान्ति से दूर रहेगा। महर्षि दयानन्द ने इसी पवित्र उद्देश्य को लेकर आर्य समाज के माध्यम से हमें यह सन्देश दिया कि आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है। उसी भावना से विपरीत परिस्थितियों में भी इस ओ३म् पताका को फहराने में कुछ महामना पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे है। वास्तव में ऐसे महामना स्तुत्य और प्रशंसा के पात्र हैं। जिन स्थानों पर आर्य समाज और वेद की ऋचाएं नहीं गूंज रही हैं वहां पर भी उसे पहुंचाना ''**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**'' की एक भूमिका है। महाशय धर्मपाल जी, महर्षि के उस सपने को पूरा करने में जो सहयोग कर रूचि ले रहे हैं वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित होगी।

कुछ दिन पूर्व ही केरल कालीकट में एक कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित होने का उन्हें अवसर मिला आचार्य एम आर राजेश ने वहां पर एक अद्भुत दृश्य जन सैलाब के रूप में उपस्थित किया। जिसे देखकर किसी भी आर्य का अभिभूत होना सामान्य बात थी। भाई विनय आर्य, श्री सुरेशजी आर्य तथा महाशय धर्मपाल जी व अन्य सहयोगियों ने वहां की श्रद्धालु जनता की भावना को समझा और विचार किया कि इस स्थान पर परमात्मा की उस पवित्र वाणी वेद का प्रचार प्रसार करने के लिये अनुकूल मानसिकता है। आचार्य एम आर राजेश एक कर्मठ, व्यावहारिक और समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं, जिनके पास योजना है, साहस है, समर्पण भाव है, किन्तु अभाव साधनों का है। यदि साधन जुटा दिये जायें तो यहां आर्य समाज के लिये एक बड़ा क्षेत्र तैयार हो सकता है।

इन विचारों से महाशय धर्मपाल जी ने आपस में विचार विमर्श कर भूमि खरीदने का निर्णय लिया और अभी एक सप्ताह पूर्व वहीं पर दो करोड़ रूपए की लागत से केरला के कालीकट में भूमि खरीदी। इस भूमि में वैदिक सिद्धांतों के अतिरिक्त मानव और सुसंस्कृत समाज के हेतु प्रारंभ की जाएगी। इस प्रकार यह कार्य आर्य जनों को उत्साहित और नव चेतना देने वाला है। निश्चित ही जहां आर्य समाज के प्रति कुछ लोग निराशा भाव रखते हैं, उनके लिए यह कार्य एक नव चेतना देने वाला होगा। इस हेतु महाशय धर्मपालजी को समस्त आर्यजन की ओर

– *शेष पृष्ठ 8 पर*

युवा शिविर-महिला शिविरों के माध्यम से वेद एवं यज्ञ प्रचार के नए आयाम

केरल में आर्ष गुरुकुल की स्थापना : संसार से अज्ञान दूर करने का प्रयास

आर्ष पद्धति के गुरुकुल का केरल में आरम्भ होना सुखद भविष्य का संकेत – धर्मपाल आर्य

वेद प्रचार के कार्यों को बढ़ाने के लिए सभी कार्यकर्त्ता बधाई के पात्र – विनय आर्य

महर्षि दयानन्द के समय में देश भर में शिक्षा की अति दयनीय स्थिति थी। आजकल की भांति स्कूल, कालेज, शिक्षण संस्थान तथा गुरूकुल आदि नहीं थे। देश के लोगों को पढ़ने के लिए भारी असुविधा का सामना करना पड़ता था। कुछ बड़े शहरों यथा कोलकत्ता व लाहौर आदि में अंग्रेजी पद्धति के स्कूल आदि थे। वाराणासी या काशी में संस्कृत पढ़ने की कुछ सुविधा तो थी परन्तु वह भी अत्यन्त असुविधाजनक थी। देश के अन्य भागों विशेषकर गावों आदि में शिक्षा की सुविधायें लगभग न के बराबर थीं। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने वेदों, वैदिक विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने देश भर में घूम-घूम कर प्रवचन व उपदेश किये। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, संस्कृत वाक्य प्रबोध, कुछ अन्य ग्रन्थ तथा संस्कृत भाषा के अध्ययन में सहायक व्याकरण आदि के अनेक ग्रन्थों की रचना की। सत्यार्थ प्रकाश सन् 1875 में लिखा व प्रकाशित किया गया था। इसका दूसरा संशोधित संस्करण जो उनके द्वारा लिखित व संशोधित था, जिसकी मुद्रण प्रति के प्रूफ को उन्होंने देखा व संशोधित किया था, उनकी मृत्यु के कुछ महीनों बाद, सन् 1884 में, अस्तित्व में आया। इस ग्रन्थ के तीसरे समुल्लास में उन्होंने आर्ष पाठ विधि व आर्ष व्याकरण के पठन पाठन हेतु गुरूकुलीय व्यवस्था का समर्थन किया था। उन्होंने अपने समय में कुछ पाठशालायें खोल कर भी इसका आरम्भ कर दिया था। उनकी मृत्यु के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सबसे पहले उनके विचारों व सिद्धान्तों के अनुरूप एक गुरूकुल हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में स्थापित किया था। हम समझते हैं गुरूकुल का कांगड़ी ग्राम में स्थापित होना एक ऐतिहासिक घटना थी और देश से अविद्या व अज्ञान मिटाने व हटाने में एक बहुत बड़े शिक्षा यज्ञ का शुभारम्भ था। इसके पश्चात् आर्य समाज ने सहस्रों गुरूकुल स्थापित किये। इसी परम्परा में केरल के वेलीनेझी, जिला पालककड, केरल राज्य में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, श्री के.एम. राजन,

– *शेष पृष्ठ 8 पर*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8-9वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

20 जुलाई, 2014 : आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 | **28 सितम्बर, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.)**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 8 वें एवं 9वें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **8वां सम्मेलन रविवार, 20 जुलाई, 2014 को आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली** में तथा **9वां सम्मेलन 28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.)** में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम प्रति सम्मेलन **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1**' के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **दिल्ली हेतु 5 जुलाई, 2014** तथा **(इन्दौर हेतु) 8 सितम्बर, 2014** तथा तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी दोनों स्थानों पर तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे जोकि सभी प्रतिभागियों को 10 अक्तूबर, 2014 तक भेजी जाएगी।

निवेदक : श्री अर्जुनदेव चड्ढा,
राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 दूरभाष :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. -011-23488888

पंजीकरण प्रपत्र

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :.....गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
.....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई: विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा: ☐ तलाकशुदा: ☐ विकलांग: ☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 400/- (इन्दौर तथा दिल्ली में आयोजित दोनों सम्मेलनों हेतु) अथवा 200/- (इन्दौर या दिल्ली में आयोजित किसी एक सम्मेलन हेतु) का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम **एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। **परिचय सम्मेलन दिनांक 20 जुलाई, 2014 रविवार को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली तथा 28 सितम्बर, 2014 (रविवार)को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) में सम्पन्न होंगे।**
कृपया सही (✔) का निशान लगाएं।
☐ इन्दौर में (200/-) ☐ दिल्ली में (200/-) ☐ दोनों में (400/-)

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण के लिए फार्म केवल दिल्ली सम्मेलन कार्यालय में ही भेजे जाएं।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं किया जाएगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

आर्यसमाज खजूरी खास दिल्ली का
5वां वार्षिकोत्सव समारोह
समापन समारोह : 22 जून, 2014
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रात: 7 से 9 बजे
ब्रह्मा : पं. राजकुमार शास्त्री
भजन : श्री उदयवीर सिंह आर्य
मुख्य वक्ता : आचार्य यशपाल
प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
मु.अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य, व.उ.प्र.
- *अंगद सिंह आर्य, प्रधान*

पुण्यतिथि पर यज्ञ

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में दिनांक 25 मई को प्रचारक-भजनोपदेशक स्व. कृपाराम आर्य जी की 7वीं पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके यजमान उनकी सुपुत्री एवं दामाद श्री महेन्द्रपाल विग थे। श्री विग आर्यसमाज दाल बाजार के मन्त्री भी हैं।
- **मन्त्री**

आवश्यकता है

श्रीमद्दयानद आर्ष गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 को कक्षा 6 से लेकर 12वीं कक्षा तक अग्रेजी, विज्ञान,एवं संस्कृत व्याकरण पढ़ने के लिए सुयोग्य अध्यापकों की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें - **आचार्य सुधांशु, मो. 9050838952, 8800443826**

आर्य समाज नरेला दिल्ली का 83वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न
स्वामी ओमानन्द जी के नाम से मार्ग का नामकरण

आर्य समाज नरेला दिल्ली-40 का 83वां वार्षिकोत्सव दिनांक 31 मई व 1 जून 2014 को उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 31 मई को प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई तथा सायं को महिला सम्मेलन हुआ। जिसका संचालन श्रीमती ज्योति आर्या एवं श्रीमति सरोज आर्या ने किया।

मुख्य सम्मेलन 1 जून को हुआ जिसमें सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य एवं वरिष्ठ उपप्रधान धर्मपाल आर्य के ओजस्वी प्रवचन हुए, जिनका श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा। मुख्य अतिथि डॉ उदित राज, सांसद उ.प.दिल्ली, श्री नीलदमन खत्री (विधायक) श्री मोहन भारद्वाज (अध्यक्ष निगम स्थाई समिति) श्रीमति केशरानी खत्री (निगम पार्षद) प्रसिद्ध गौभक्त एवं समाज सेवक श्री राजेन्द्र सिंघल एवं आर्य समाज नरेला के संरक्षक चौ. संतोष कुमार रहे।

इसके साथ क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर नरेला की श्रीमति रूचि कौशिक, श्रीमति संध्या रानी एवं कुमारी गीतांजलि को शिक्षा क्षेत्र में उनकी विशेष उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। इसके साथ ही सांसद डॉ उदित राज व विधायक नीलदमन खत्री ने आर्यसमाज के प्रांगण में नव निर्मित फिजियोथेरेपी केंद्र एवं नए कार्यालय का उद्घाटन किया।

तत्पश्चात आर्य समाज नरेला एवं कन्या गुरुकुल नरेला के संस्थापक तपोमूर्ति स्वामी ओमानन्द सरस्वती मार्ग (मामूरपुर, नरेला) का उद्घाटन सांसद डॉ उदित राज ने, श्री मोहन भारद्वाज तथा क्षेत्र की निगम पार्षद श्रीमती केशरानी खत्री द्वारा नरेला के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। *-राजपाल आर्य, प्रधान*

आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई ने आदर्श जीवन निर्माण शिविर का आयोजन 11 से 18 मई तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज में आयोजित किया। शिविर के मुख्य शिक्षक श्री धर्मेन्द्र आर्य (मुम्बई), श्री प्रशान्त आर्य (अलीगढ़) एवं श्री हरेन्द्र आर्य (मुजफ्फर नगर) थे। आदर्श जीवन निर्माण के अन्तर्गत शिविरार्थियों के लिए शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक उन्नति के लिए अनेक विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्ग दिया गया। 18 मई को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वतीजी की अध्यक्षता में समापन समारोह हुआ, जिसमें शिविरार्थियों ने स्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, नियुद्धम्, जूड़ो-कराटे, येगासन, स्तूप, मलखम्भ अदि का शानदार प्रदर्शन किया गया। आर्यसमाज के महामन्त्री श्री संगीत आर्य ने दीपावली की छुट्टियों में वीरांगना दल का शिविर लगाने का आश्वासन दिया।

स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए इसी प्रकार के आवासीय शिविर लगाने एवं आर्यसमाजों में नियमित शाखाएं लगाने की प्रेरणा दी।

- धर्मधर आर्य, महामन्त्री

चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल सोनीपति एवं जिला वेद प्रचार मंडल सोनीपत की ओर से वैदिक ज्ञान योग महाविद्यालय (गुरुकुल) जुंजा में 3 जून से 8 जून तक चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर काआयोजन किया गया। शिविर में जहां हरिद्वार से प्रधारे स्वामी केवलानन्द जी द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया वहां आर्य वीर दल के शिक्षक श्री जसबीर आर्य एं रोहित आर्य द्वारा अनुशासन, नैतिक शिक्ष, आसन, व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया गया। ब्र. सन्दीप जी द्वारा वैदिक संस्कृति का ज्ञान भी दिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा से पधारे आचार्य अभय कुण्डू, आचार्य वेदनिष्ठ एवं आचार्य सन्दीप के प्रवचनों तथा जनसमूह ने जन समूह को आकर्षित किया। मंच संचालन वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रमेश आर्य ने किया। *- सुदर्शन आर्य, सचिव*

प्रवेश सूचना

दिल्ली प्रदेश की प्रसिद्ध संस्था 'गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82' में कक्षा 5वीं, 6ठी, 7वीं और कक्षा 8वीं में प्रवेश आरम्भ हो गया है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें-

- आचार्य सुधांशु,
मो. 9050838952,
8800443826

आर्य वीर दल बंगाल का शिविर सम्पन्न

आसनसोल के बुद्धा स्थित दयानन्द विद्यालय में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के आर्य वीर दल के तत्वावधान में राज्य स्तरीय योग एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसका समाप 31 मई को किया गया। शिविर में लगभग 100 आर्यजनों ने भाग लिया। छत्तीसगढ़ से पधारे आचार्य शैल कुमार आर्य मुख्य प्रशिक्षक थे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री जगदीश केडिया ने कहा कि आने वाले वर्षों में यह शिविर प्रतिवर्ष नियमित रूप से लगाया जाएगा जिससे छात्रों का चरित्र निर्माण हो सके और वे अपने को वैदिक धर्म से परिवत करा सकें। सभा मन्त्री श्री सतीश चन्द्र मंडल ने पूरे शिविर में उपस्थित रहकर अपना योगदान दिया। इस अवसर पर आर्यवीरों द्वारा सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, लाठी प्रचालन, पिरामिड निर्माण के साथ-साथ अनेक प्रकार के योगाभ्यास का प्रदर्शन भी किया गया। इस अवसर पर झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आर्य भारत भूषण त्रिपाठी भी उपस्थित थे। *- प्रधान*

शोक समाचार

भजनोपदेशक श्री नरेश सोलंकी को पितृ एवं मातृ शोक

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेश सोलंकी जी के पूज्य पिता डॉ. एम. एल. सोलंकी जी का 7 जून को तथा पूज्या माताजी श्रीमती मिश्री देवी जी का 11 जून 2014 को अकस्मात देहावसान हो गया। पिताजी की आयु 85 वर्ष एवं माताजी की आयु 84 वर्ष थी।

डॉ. एम. एल. सोलंकी जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे तथा भजन लेखन का कार्य रेलवे बोर्ड से सेवानिवृत होने के बाद करते रहे थे। जबकि माता मिश्री देवी एक सुगृहिणी थी और पति के कार्यों में सदैव भागीदार रहती थीं। वे अपने पीछे 3 सुपुत्रों एवं 3 सुपुत्रियों तथा भरापूरा परिवार छोड़कर कर चले गए। उनकी स्मृति में शोक सभा १६ जून, १४ को नई दिल्ली नगर पालिका कम्युनिटी सेंटर बाबर रोड, बंगाली मार्किट , नई दिल्ली में सांय ४ बजे सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर सभा अधिकारियों एवं अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री गोपीनाथ मुंडे का निधन

महाराष्ट्र के आर्यसमाजों के सहयोगी, महाराष्ट्र में भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं भारत सरकार के नवनियुक्त केन्द्रीय मन्त्री श्री गोपीनाथ मुंडे जी का दिल्ली में कार दुर्घटना में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र की ओर से उनके पैतृक गांव परली में पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री गोपीनाथ जी का अन्तरजातीय विवाह आर्यसमाज रेणापुर, लातूर में हुआ था। उनकी स्मृति में आर्यसमाज नांदेड़ में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का भी आयोजन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्य वधू चाहिए

त्यागी ब्राह्मण, भारद्वाज गौत्र, 31 वर्ष, 5'11'', 72 किलो, गोरा, सुन्दर, एम.बी.ए., सांडियागो अमेरिका में वरिष्ट सोफ्टवेयर इंजीनियर वेतन 101000 डॉलर वार्षिक, पिता सेवानिवृत्त वैंक अधिकारी, माता गृहिणी, दिल्ली में स्थाई निवास, एक बड़ा भाई; हेतु गोरी, सुन्दर, लम्बी, प्रो. योग्यता प्राप्त, शाकाहारी, आर्य कन्या चाहिए। कोई जाति बन्धन नहीं। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें-

मो. नं. 09899809010 ईमेल : bhardwaj.sk@gmail.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 जून, 2014 से रविवार 22 जून, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 जून, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 जून, 2014

पृष्ठ 5 का शेष

पवित्र वैदिक धर्म की ..

से अनेकानेक साधुवाद। जो भामाशाह बनकर महर्षि के सपनों को पूर्ण करने और ओ३म् पताका फहराने में अपना वरद हस्त हमेशा हम पर रख रहे है। ऐसे महामना के प्रति उनके दीर्घायु और उनके स्वस्थ जीवन की सभी आर्यजन परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। आर्यो का तो इतिहास यही है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी निरन्तर अपने कदम बढ़ाते रहें। किसी कवि ने यह पंक्तियां शायद आर्यों के लिए ही लिखी है–

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिस पथ पर बिखरे शूल न हो।

नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, जब धारा ही प्रतिकूल न हो।।

इसलिए चरैवेति–चरैवेति के सिद्धान्तों को अपनाते हुए हर हालातों में मिशन के लिए बढ़ते रहें, अपनी योग्यता के अनुसार यथायोग्य प्रयास करते रहें। यही हमारा कर्म है, आर्य धर्म है। क्योंकि

चले चलिये कि चलना ही दलीले कामरानी है। जो थक कर बैठ जाते हैं, उन्हें मंजिल नहीं मिलती।।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

पृष्ठ 5 का शेष

केरल में आर्ष गुरुकुल.....

आर्य नेता श्री विनय आर्य, श्री धर्म पाल आर्य, श्री बालेश्वर मुनि वानप्रस्थी, ऋषि उद्यान, अजमेर आदि आर्य जगत के विद्वानों व नेताओं तथा कुछ स्थानीय महानुभावों प्रो. सरोजनी शंकर, श्री विवेक शिनोय आदि के सहयोग से दिनांक 8 जून, 2014 को एक नवीन गुरूकुल स्थापित हुआ। महाशियां दी हट्टी उद्योग के प्रतिनिधि श्री प्रेम कुमार अरोड़ा भी आयोजन में उपस्थित थे। गुरूकुल को 'लेखराम आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय' नाम दिया गया है। गुरूकुल के स्थान पर ही आर्य समाज भी संचालित है। गुरूकुल की स्थापना के अवसर पर ब्रह्मचारियों के उपनयन वा यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराये गये। इस अवसर पर एक सत्संग व उपेदश सभा भी की गई जिसे विद्वानों व आर्य नेताओं ने सम्बोधित किया। डा. पी.के. माधवन संस्कृत के जाने–माने प्रसिद्ध विद्वान हैं। आपने इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता की। गुरूकुल के कुलपति श्री के.एम. राजन ने श्रोताओं एवं सभा में उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया और अपने विचार प्रस्तुत किए। गुरूकुल के निदेशक श्री वी. गोविन्दा दास ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर पांच ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार सम्पन्न हुआ जिसे चित्र में देखा जा सकता है। इस आयोजन में पांच ब्रह्मचारियों के अभिभावक व परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे। सभी प्रमुख व्यक्ति व ब्रह्मचारियों के परिवार के कुछ सदस्यों ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस गुरूकुल की स्थापना में श्री बालेश्वर मुनि वानप्रस्थी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। गुरूकुल के संचालकों ने आर्यजनों व सभी देशवासियों से अपेक्षा की है कि उन्हें गुरूकुल के संचालन में उनसे हर प्रकार का सहयोग प्राप्त होगा।

– मनमोहन कुमार आर्य

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह